P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-4*(Supplementary Issue) July- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

अनसुलझे सवालों से जूझता उपन्यास 'एक इंच मुस्कान'

सारांश

एक इंच मुस्कान उपन्यास में लेखक दंपती मन्नू भंडारी तथा राजेन्द्र यादव ने आधुनिक जीवन के खंड़ित व्यक्तित्व को प्रकट करते हुए वर्त्तमान जीवन के संदर्भ में परिवर्त्तित सामाजिक, आर्थिक तथा पारिवारिक परिस्थितियों का चित्रण किया है। शकुन, अमला, रंजना, मंदा आदि पात्र नारी जीवन के दृष्टिकोण से प्रस्तुत किये गये हैं, जबकि अमर पुरूष जीवन के दृष्टिकोण से रचित पात्र है।

वस्तुतः रंजना और अमला, अमर के निकट के दो संपर्क नहीं, दो स्वतंत्र मूल्य हैं। और इन मूल्यों की संगति का निरूपण ही अमर का आभ्यांतरिक (स्पिरिचुअल) द्वंद्व है। उपलब्धि की 'महानता' और 'शुद्धता' से कलाकार की कला यात्रा को न जाँच कर, प्रयत्न की निष्ठा और अभिव्यक्ति की आकुलता को कसौटी बनाया जाये तो इन दोनों मूल्यों को शायद कुछ समझा जा सकेगा।

मीना कुमारी
प्राध्यापिका,
हिन्दी विभाग,
टीडीबी कॉलेज,
रानीगंज, पश्चिम बर्दवान,
पश्चिम बंगाल

मुख्य शब्द : एक इंच मुस्कान, उपन्यास, मन्नू भंडारी।

प्रस्तावना

'एक इंच मुस्कान' उपन्यास के सृजन की प्रक्रिया जितनी जटिल और अनोखी है, उसका थीम उतना ही अधिक मौजूं तथा समसामयिक है। कथित विकास के मौजूदा दौर में बिखरते दाम्पत्य जीवन, पुरूषों की सत्तात्मक मानसिकता और पाम्परपरिक व आधुनिक नारी चिंतन के बीच चल रहे अंतर्द्वंद्व के कारण इसकी प्रासंगिकता और भी बढ़ती जा रही है। इस उपन्यास में पति, पत्नी और 'वो' के संबंधों को लेकर जो मुद्दे उठाये गये हैं, वे इस समय भी पूरी तरह से अनुत्तरित हैं। परिवार और कैरियर के बीच मौजूद परिस्थितियां और भी संवेदनशील होती जा रही हैं। और इसके भयावह परिणाम सामने आ रहे हैं। दो साहित्यकार अपनी–अपनी पृष्ठभूमि, स्वतंत्र चिंतन तथा भविष्य द्रष्टा की सोच के बाद भी इस मुद्दे पर स्पष्ट दिशा तलाशने में विफल साबित होते हैं।

इस उपन्यास की विशिष्टता यह है कि इसे चर्चित दो साहित्यकारों – राजेन्द्र यादव और मन्नू भंडारी ने संयुक्त रूप से लिखा है। इसे सबसे पहले 'ज्ञानोदय' पत्रिका ने प्रकाशित किया था। यह पहला प्रयोग नहीं था। इसके पहले भी धारावाहिक रूप से कई उपन्यासकारों तथा साहित्यकारों ने मिलकर सृजन किया है। स्वाभाविक तौर पर दोनों इसके लिए कुछ चिंतन के बाद तैयार हो गये। लक्ष्मी जैन ने दोनों को इसके लिए सहमत किया था कि पहला अध्याय राजेन्द्र यादव लिखेंगे तथा दूसरा अध्याय मन्नू भंडारी लिखेंगी। इसके बाद ही यह सृजन प्रक्रिया पूरी हो सकी, लेकिन यह भी सच है कि इस उपन्यास की पूरी प्रसव–वेदना मन्नू जी ने भोगा और वे स्वीकार भी करती है। इस पर वे कहती है– "सबसे बड़ी और प्रमुख बात तो यह है कि इसका थीम ही मेरे अपने लिखे उपन्यास पर आधारित है। दूसरा, तीन प्रमुख पात्रों में से दो का निर्वाह करने का दायित्व मेरा......जिसमें से एक पात्र तो इतना महत्वपूर्ण कि उसकी चारित्रिक विशेषता पर ही उपन्यास का शीर्षक रखा गया है। अब जब योगदान इतना ज्यादा हो तो उसी अनुपात में मेरा अधिकार भी उतना ही ज्यादा हो जाता है।"[1]

मन्नू जी के सृजन और कथा–साहित्य में समाज और परिवार मुख्य रूप से केंद्रित रहा है। इन दोनों के केंद्र में संयुक्त परिवार का विभाजन एकल परिवार अपने–अपने कैरियर व दांपत्य के बीच उभरते अंतर्द्वन्द्व, पारिवारिक भारतीय व आधुनिक नारी तथा टूटते–बिखरते व्यक्तित्व शामिल रहे हैं। उनके कथा साहित्य में स्त्री का एक अलग और नूतन रूप उभरता है। संवेदना, परिवेश और परिस्थितियों के प्रति गहरी सहानुभूति ही उन्हें बार–बार कुछ नया या अनसुलझे सवालों को सुलझाने के लिए उत्प्रेरित करती है।

वे स्वयं ही मानती हैं– "कुछ बातें अनायास ही मेरे सामने उजागर होकर उभरी, अपने भीतरी 'मैं' के साथ जुड़ते चले जाने की चाहत में मुझे कुछ हद तक इस प्रश्न का उत्तर भी मिला कि मैं क्यों लिखती हूँ? किसी भी रचनाके छपते ही इस इच्छा का जगना कि अधिक से अधिक लोग केवल पढ़े ही नहीं, बल्कि इससे जुड़े भी, संवेदना के स्तर पर उसके भागीदार बने"।[2]

इस उपन्यास में तीन प्रमुख पात्र हैं। 'अमर' प्रतिष्ठित कथाकार है। उसकी रचनाएं छपती भी हैं तथा लोकप्रिय भी है। उसके पाठक भी हैं और फैन भी। वह स्वीकार करता है कि उसके लिए लिखना जिंदगी जीने का दूसरा नाम है, जिसका 'धन न बैंकों में, न मिलों में, यह मेरे मस्तिष्क में है, मेरी कलम में है। दूसरी महत्वपूर्ण पात्र रंजना है। वह अमर की प्रेमिका है। काफी दिनों तक एक–दूसरे से प्यार में जुड़े रहने के बाद भी आसानी से शादी पर सहमति नहीं बन पाती है। इसके लिए कहीं न कहीं अमर के मन में सतत् चलनवाला अंतर्द्वंद्व है। लेकिन रंजना की निष्ठा तथा प्रतिबद्धता अमर के प्रति बनी रहती है। आखिरकार दोनों शादी करने पर राजी होते हैं। रंजना अंतर्जातीय प्रेम विवाह करती है। वह अमर के लिए घर–परिवार और शहर सब कुछ छोड़ कर आती है। अपनी शादी को लेकर उसे कभी कोई मलाल भी नहीं रहता है। लेकिन शुरुआती दौर में वह कहीं न कहीं चिंतित भी रहती है– 'इन साहित्यकारों का कोई भरोसा नहीं, इन्हें एक पत्नी, एक प्रेयसी, एक प्रेरणा, न जाने कितनी–कितनी लड़कियां चाहिए'। इन दोनों के दाम्पत्य जीवन में वो यानी तीसरी पात्र अमला है। रईस खानदान की इकलौती संतान होने के कारण वह स्वच्छंद और आधुनिक विचारों की है। यही कारण है कि शादी के एक वर्ष के बाद ही उसका दाम्पत्य जीवन बिखर जाता है। पति से अलग होकर परित्यक्ता का जीवन बिताती है। हालाँकि उसे इसका कोई मलाल नहीं है। वह मानती है कि व्यक्तिव वैसा होना चाहिए कि यदि कोई उससे एक बार मिल ले, तो जीवन भर उसे भूल न पाये। वह अमर के संपर्क में पाठक और मित्र बन कर आती है। क्रमिक रूप से उनका सानिध्य बढ़ता जाता है। वह अमर पर अपना अधिकार समझने लगती है तथा उसे अपनी मानसिकता के अनुसार संचालित करने के लिए उद्धत रहती है। वह उसे सृजन व लेखन के लिए हमेशा उत्प्रेरित करती है। वह दाम्पत्य जीवन को सृजन व लेखन के लिए बाधक मानती है। वह चाहती है कि अमर यायावर की जिंदगी जिये ताकि उसका सृजन निरंतर चलता रहे।

अमर दुविधा, उधेड़बुन में फंसा व्यक्तित्व है। सृजक होने के नाते सपनों और फिलोसफी की दुनिया में रहने वाला इंसान है। शायद इसके लिए उसे दोष नहीं दिया जा सकता है। उसका मानना है – 'कलाकार तो धारा है, हर कहीं बहता है, जब तक गति है, तब तक कला है, फिर न गति रहेगी, न कला, धारा तालाब हो जायेगी। रंजना और अमला जिंदगी में बहुत आएँगी, लेकिन न अमर प्रतिभा आयेगी ना प्रतिभा के स्फुरण के ये क्षण आयेंगे'। दूसरी ओर अमला चाहती है कि अमर लिखे और खूब व लगातार लिखे। 'तुम्हारा लेखन साहित्य की एक उपलब्धि है।' अमला के साथ अमर की 'मधुर मैत्री' लेखक और पाठक का रिश्ता रंजना की समझ से बाहर हो जाता है – 'ये मित्र क्या होती है, या तो बहन होती है या भाभी।'

लगभग पूरा उपन्यास अमर, रंजना के अंदर वैचारिक चिंतन, अमला के बीच की खींचातानी और उतार–चढ़ाव को बयां करता चलता है। लेकिन इन सवालों का सटीक जवाब नहीं मिल पाता है। आखिरकार अमला अपने पूर्वनिर्धारित मुकाम पर पहुँचती है।

राजेन्द्र यादव और मन्नू भंडारी के काफी करीबी रहे तथा उनके दाम्पत्य जीवन के जानकारों में से अधिसंख्य का मानना है कि यह उपन्यास उन दोनों की निजी जिंदगी का लेखा–जोखा है। लेकिन स्वयं मन्नू भंडारी ने कई साक्षात्कारों में स्वीकार किया है कि इन पात्रों का उनका निजी जीवन से कोई संबंध नहीं है। लेकिन यह तर्क पूर्ण रूप से स्वीकार्य नहीं हो सका है।

उपन्यास की समीक्षा के बाद पूरी स्पष्टता के साथ यह तथ्य उभर कर सामने आता है कि अमर दो स्वतंत्र मूल्यों के बीच घिरा खंडित व्यक्तित्व है। पत्नी और प्रेमिका के बीच निरंतर झूलता रहता है। प्रेम विवाह, सुख सुविधा के परंपरागत संस्कार, कभी उन्हें प्राप्त करने की चाह नहीं है, अर्थात् एक ओर मानवीय नैतिकता बोध और दूसरी ओर स्रष्टा व्यक्तित्व की उच्चतर मुक्ति कामना, एक के प्रति वह उपेक्षा धारण नहीं कर पाता है तो दूसरे की पुकार को अनसुना भी नहीं कर पाता है। पत्नी रंजना के साथ सब कुछ है। सहानुभूति, संस्कार, समाज और स्वयं अमर की चाह। जबकि अमला के पास उन्मुक्त व्यवहार, बेधक मुस्कान है। इन दोनों के बीच अमर अपने लक्ष्य को लेकर दुविधाग्रस्त रहता है। एक ओर प्रेम और दांपत्य जीवन है तो दूसरी ओर कैरियर है। वह स्वयं स्वीकार करता है – " मेरा भी घर हो, जहां प्यार हो, स्नेह हो, रंजना हो, कैसे अस्वीकार कर दूं कि यह मेरा भी बड़ा सपना रहा है। पर मेरे जीवन का उद्देश्य, जीवन का यथार्थ, इससे बहुत भिन्न है और इसलिए इतने अरमान और उमंगों से बनाये अपने भविष्य के नक्शे को निर्ममता से मैं अपने हाथों से मिटा रहा हूँ।[3]

अमर किसी निर्णय पर अडिग नहीं रह पाता। निर्णय लेने की दुर्बलता उसे बरबाद कर देती है। कभी वह रंजना का होता है, तो कभी अमला की ओर खिंचता है। कभी पारंपरिक पुरूष की चाहत मन में सँजोता है तो कभी उन सबको झटक लेखकीय चेतना से लैस हो जाता है। वह अपने जीवन का यथार्थ लेखन को मानता है।

'कलाकार' का जीवन उसके पास धरोहर की तरह होता है।[4] अमला के इस कथन से अमर का विश्वास पनपता है। यही विश्वास उसे ' द्रष्टा ' और ' स्रष्टा ' के दो भागों में बाँट देता है। वह दो पाटों के बीच पीसता रहता है। अमला का उन्मुक्त व्यवहार और उसकी जादुई मुस्कान की ओर अमर खींचा ही रहता है। किंतु साथ चल कर, साथ रह कर भी वे एक नहीं हो सके। वह स्वयं कहता है– "यों हम दोनों शायद ही कहीं भी एक–दूसरे की जिंदगी को काटते नहीं हैं..... उसका अपनी जीवन है। अपनी समस्याएँ। संपर्क और संबंध हैं.... मेरी अपनी जिंदगी की धार है, अपने सुख–दुःख है। आपस में हम

दोनों कहीं एक–दूसरे का रास्ता नहीं काटते, सिर्फ समानान्तर चलती दो रेखाएँ हैं..."[5]

अमर अमला के व्यक्तित्व में बँधा उसके पीछे–पीछे घूमता रहता है, किंतु उसका एकांत नहीं भर पाता है। अकेलेपन से ग्रसित अमला निराशा की गर्त में फंसी हुई इस दुनिया से विदा ले लेती है।

एकनिष्ठ प्रेम के बदले में मिली गहरी निराशा रंजना को तोड़ देती है और वह अमर को छोड़ कर चली जाती है। रंजना और अमला दोनों अमर की जिंदगी से दूर चली जाती हैं। और रह जाता है तो अकेला अमर, जो किसी लक्ष्य पर नहीं पहुँच कर भटकता रहता है।

अध्ययन का उद्देश्य

छठवें दशक से हिंदी जगत को अपने लेखन द्वारा नई चेतना प्रदान करने वाली मन्नू भंडारी का हिंदी जगत में दीप स्तंभ की तरह है। उनका समस्त रचना संसार उपन्यास, कहानी, नाटक इन तीनों विधाओं से ग्रंथित है। मन्नू जी एक संवेदनशील तथा समाजधर्मी लेखिका, जन जीवन की समस्याओं की तह तक पहुँच कर उन्हें निरावरण करके पाठकों के सम्मुख रखने का प्रयास करती रही हैं। दिशा–निर्देशन तथा सामाजिक जागरण के प्रयत्न उनके साहित्य का सचेतन उपलब्धि है। हिंदी कहानी के परिदृश्य पर मन्नू भंडारी अपने लेखन के द्वारा अपनी उपस्थिति दर्ज करती आ रही हैं। स्त्री के दृष्टिकोण से उसकी भावनाओं, उसके इर्द–गिर्द उपस्थित परिस्थितियों को अपना विषय बना कर लिखनेवाली मन्नू जी ने न केवल स्त्री से जुड़ी समस्याओं का चित्रण किया, बल्कि समाज में व्याप्त सामाजिक समस्याओँ व पारिवारिक समस्याओं का चित्रण भी अपनी रचनाओं में किया है। मन्नू जी ने अंतर्द्वंद्व से उत्पन्न समस्याओं और पारिवारिक समस्याओं तथा मध्यवर्गीय जीवन में व्याप्त लोगों के मानसिक तनाव का चित्रण करते हुए उनके दंभ, अहं, स्वार्थ आदि का उद्‌घाटन बखूबी करती हैं।

निष्कर्ष

इस प्रकार, हम देखते हैं कि कथा–साहित्य में अन्तर्द्वन्द्व का विशिष्ट स्थान होता है। अंतर्द्वंद ही घटना को आगे बढ़ाने में योग करता है। 'एक इंच मुस्कान' में अन्तर्द्वंद्व तो खूब उभरा है, लेकिन उपन्यास में तर्क की प्रधानता अधिक हो गई। कथा में जो किस्सागोई होती है, उसका अभाव यहाँ है। भारतीय मन आख्यानक परंपरा में विश्वास करता है। कविता हो या नाटक, कहानी हो या उपन्यास, सब में पाठक रसानुभूति की अपेक्षा करता है। इस दृष्टि से 'एक इंच मुस्कान' निराश करता है। फिर भी इस उपन्यास में लेखकीय जीवन के ऐसे अनेक पहलुओं को उद्‌घटित किया गया है जो इसके पूर्व किसी ने नहीं किया था। इसलिए भी यह अपने ढंग का एक विशिष्ट उपन्यास है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *संपूर्ण उपन्यास, मन्नू भंडारी, प्रकाशक, राधाकृष्ण, पहला संस्करण, 2009, पृष्ठ 8*
2. *मन्नू भंडारी का कथा संसार, दिलीप मेहरा, प्रकाशक – क्लासिकल पब्लिशिंग कंपनी, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2009, पृष्ठ 21*
3. *एक इंच मुस्कान, मन्नू भंडारी, राधाकृष्ण प्रकाशन, संस्करण 2009, पृष्ठ 43*
4. *एक इंच मुस्कान, मन्नू भंडारी, राधाकृष्ण प्रकाशन, संस्करण 2009, पृष्ठ 45*
5. *एक इंच मुस्कान, मन्नू भंडारी, राधाकृष्ण प्रकाशन, संस्करण 2009, पृष्ठ 46*